ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

हिमाचल की हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता

शालिनी देवी

पीएच.डी हिंदी
हिमांचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
shallini555@gmail.com

हिमाचल का हिंदी साहित्य अनेक संभावनाओं से भरा पड़ा है। इसका कारण यहाँ की समृद्ध सामाजिक -सांस्कृतिक परम्परा है, जिसमें वह सादापन और संघर्ष है, जो रोजमर्रा के जीवन से जुड़ा हुआ है। हिमाचल के कथाकारों ने लोक साहित्य, समाज और संस्कृति को नए तरीके से प्रस्तुत किया है। विमर्श के इस दौर में हिमाचली हिंदी कहानियाँ एक नयी निर्मिति करती हैं। इन कहानियों में नयापन है एवं अनंत भविष्यगत संभावनाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

हिमाचल प्रदेश दुर्गम पहाड़ियों का प्रदेश है। यहाँ की मिट्टी की खुशबू में जहाँ एक तरफ सौहार्द, एकता, भाईचारगी और समन्वय की भावना है, वहीं दूसरी ओर कठिन संघर्षों से गुजरते हुए मुस्कुराकर जिन्दगी को व्यतीत करने की कला भी है। यही विशेषताएं हिमाचल को और भी ज्यादा खूबसूरत बनाती हैं। यहाँ का जनजीवन पर्यावरण के अनुरूप है। हिमाचल के कथाकार स्वयं पहाड़ी क्षेत्र के ग्रामीण इलाके में रहते हैं, उनकी रचनाओं में पहाड़ी जीवन के साथ- साथ समाज की समस्याओं का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने स्वयं जीवन में संघर्ष और दुःख को भोगा है, इसका प्रभाव उनकी कहानियों में पड़ना स्वाभाविक है।

हिमाचल प्रदेश के कथा- साहित्य की शुरुआत मौखिक तौर पर होती है एवं कालान्तर में लिखित रूप से संयोजित, संवर्धित एवं परिवर्धित होती है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी हिमाचल के प्रथम कहानीकार हैं, उनके द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा था' कथा जगत में ऐसा अनमोल रत्न है, जिसे विश्व की चुनिन्दा व महत्त्वपूर्ण कहानियों में शामिल किया गया है। हिमाचल में हिंदी कहानी परम्परा की शुरुआत 'उसने कहा था' कहानी से मानी जाती है, लेकिन हिमाचल के प्रख्यात आलोचक एवं कहानीकार डॉ. सुशील कुमार फुल्ल का कहना है कि- "सन 1911 ई. में हिमाचल की प्रथम हिंदी कहानी 'सुखमय जीवन' का प्रणयन हुआ। 'सुखमय जीवन' की रचना चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने की। अत: चंद्रधर शर्मा गुलेरी को हिमाचल का आदि कथाकार मानना उचित है।"[1]

हिंदी कहानी के इतिहास को देखकर यह कहा जा सकता है कि मुंशी इंशा अल्ला खां की कहानी उदयभान चरित, रानी केतकी की कहानी, भारतेंदु द्वारा लिखित अद्भुत स्वप्न, राधाचरण गोस्वामी जैसे लेखकों की कहानियाँ प्रथम कहानी यात्रा का पड़ाव है। कहानी लेखन का दूसरा पड़ाव आधुनिक युग के शुरुआती दौर अर्थात सन 1900 ई. में लिखित इंदुमती से शुरू होता है और इसी क्रम में जहाँ एक तरफ बंग महिला, वृंदावनलाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, राजा राधिकारमण सिंह, जे.पी. श्रीवास्तव जैसे कहानीकार अपनी कहानियों में समाज की तमाम विसंगतियों को क्रमबद्ध कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ हिमाचल की कहानी परम्परा में चंद्रधर शर्मा गुलेरी जैसे यशस्वी कहानीकार ने चार-पाँच कहानियाँ लिखकर साहित्य में अक्षुण्ण स्थान बना लिया। उसी समय हिमाचल के हीरक हस्ताक्षर यशपाल, निर्मल वर्मा आदि कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से हिमाचल की यथार्थवादी कथा संसार का इतिहास रच रहे थे।

1970 ई. कुलभूषण कायस्थ की बारह कहानियों का संग्रह 'घिराव' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की अधिकतर कहानियाँ नारी जीवन की समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं। सातवें दशक में बहुत से ऐसे कहानीकार हैं, जिनकी कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं, जिनके माध्यम से कहानी साहित्य को समृद्ध करने वाले बहुत से कहानीकारों के स्वतन्त्र कहानी संग्रह आए। इस दशक में हिमाचल के कहानीकारों का कहानी विधा की ओर विशेष लगाव हुआ, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के कहानी साहित्य को एक विशेष पहचान दी।

आठवें दशक में प्रदेश में अनेक राजनीतिक- सांस्कृतिक परिवर्तन हुए । वर्ष 1971 में हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त होने के बाद कला, संस्कृति व भाषा अकादमी की स्थापना हुई, जिसके फलस्वरुप साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। इस काल तक आते-आते हिमाचल के कहानीकारों में मानव जीवन को देखने का ढंग और चिंतन दोनों में व्यापक रूप से बदलाव हुआ। वह अब सिर्फ पहाड़ों तक सीमित नहीं बल्कि उसकी गूँज पुनर्जागरण के रूप में शहरों तक पहुँचने लगी है। इस समय जितनी भी कहानियाँ लिखी गयीं सब कथ्य एवं शिल्प में प्रगतिशील कही जा सकती हैं। इस काल खंड में 'एक कथा परिवेश' नामक शीर्षक से किशोरी लाल वैध के सम्पादन में प्रतिनिधि कहानियाँ प्रकाशित हुईं जिनमें निम्नलिखित कहानीकार; सुंदर लोहिया, खेमराज गुप्त, सुशीलकुमार फुल्ल, श्री निवास श्री कान्त आदि कथाकार थे।

स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य में अनेक हिमाचली कहानीकारों ने निरंतर अपनी वैविद्ध्यपूर्ण पहचान कायम की है। हिमाचल की हिंदी कहानी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विषयगत आयामों को लिए हुए है। हिमाचली हिंदी कहानी समान्य पहाड़ी व्यक्ति के संस्कारों और संघर्षों को व्यक्त करती है और उसके साथ पिछड़ापन, अन्धविश्वास को भी दर्शाती है। इस समय की कहानियाँ हिमाचल की कहानी परम्परा की नींव को मजबूत ही नहीं करतीं बल्कि उन्हें पुष्पित और पल्लवित भी करती हैं।

हिंदी कथा-साहित्य में आरम्भ की कहानियों में और आज की वर्तमान कहानी में जैसा परिवर्तन हो रहा था, वैसा ही हिमाचल की कहानी कला में लगातार बदलाव आते गए। हिमाचल के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में व्यक्ति से जुड़े सभी मुद्दों पर लिखना और साथ ही बहस करना भी शुरू किया। समकालीन चेतना और आधुनिकतावादी प्रभाव से हिमाचल प्रदेश भी अछूता ना रहा। यहाँ के लोगों ने अपने हक़ और अधिकार के लिए लड़ना शुरू किया, इसके साथ ही पत्र-पत्रिकाओं में अपनी मूलभूत समस्याओं को कहानियों के माध्यम से सामने लाने का कार्य भी किया। 1970 के बाद हिमाचल, पंजाब से अलग एक स्वतंत्र राज्य बना, इस स्वतंत्रता ने हिमाचल प्रदेश के लोगों को प्रगतिशील बना दिया। नवें दशक तक आते-आते हिमाचल में अस्मिता-मूलक विमर्श के प्रति कहानी लेखन की परम्परा ने एक नया रुख अपनाया। 1990 का दशक हिमाचल की हिंदी कहानी लेखन का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। हिमाचल के कहानीकार बाहर की पत्रिकाओं में छपते गये और उनका सम्पर्क बाहर के कहानीकारों से बढ़ता गया। फलस्वरूप लेखन का दायरा विस्तीर्ण होता गया एवं अस्मिता-मूलक विमर्श के प्रति एक बहुआयामी दृष्टिकोण पनपता गया। अब कहानियों में स्त्रियों तथा दलित स्त्री की स्थिति और उनकी अस्मिता से जुड़े स्वर सुनाई देने। कहानी का तल्ख़ प्रतिरोधी रूप दिखाई पड़ने लगा। कथाकारों ने अपनी कहानियों में स्त्री के अस्तित्त्व बोध, आत्मनिर्णय और अभिव्यक्ति के प्रश्न को केंद्र में रखा। हिमाचल के कुछ कहानीकार ऐसे हैं, जिनकी कहानियों में स्त्री अस्मिता से सम्बन्धित कई-कई मुद्दे एक साथ दिखाई पड़ते हैं। जिनमें प्रमुख कहानीकार श्री निवास श्री कान्त, शान्ता कुमार, केशव, एस. आर. हरनोट, चन्द्ररेखा डढवाल, डॉ. गौतम शर्मा व्यथित, आत्मारंजन, सुदर्शन वशिष्ट, राजकुमार राकेश, बद्रीसिंह भाटिया एवं ओम भारद्वाज आदि हैं। हिमाचल का हिंदी कथा साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। यहाँ के कथा लेखकों ने कहानियों के जरिए स्थानीय समस्याओं से लेकर देश की समस्याओं तक अपनी दृष्टि केन्द्रित की है। कहानीकार जहाँ गाँव की इकाई के माध्यम से एक बड़े समाज को स्वयं में समेटता है वहीं दूसरी तरफ समाज की अदृष्ट समस्याओं पर गहन चिंतन करता है।

इस दशक में हिमाचल की हिन्दी कहानी नई संभावनाओं को लेकर विकसित होती दिखती है। हिमाचल की कहानी विधा भी अन्य विधाओं की तरह क्षेत्रीय अस्तित्व की तलाश में निरंतर बढ़ती रही। हिमाचल की हिन्दी कहानियों में एक तरफ मानवीय रिश्ते और उनमें पनपती विकृतियां हैं, तो दूसरी ओर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को मुखरित किया गया है। हिमाचली हिन्दी कहानियों में जो विद्रोह दिखता है, वह हमारे समाज में परिवर्तन लाने में सहायक हो सकता है। हिमाचली कथाकारों की कहानियों के सभी स्त्री पात्र अपनी अस्मिता के साथ उपस्थित होते हैं, इसके साथ ही निर्णय लेने में भी सक्षम हैं। हिमाचल की हिन्दी कहानी ने इस दशक में राष्ट्रीय धारा की कहानी के साथ पहचान बनाने में भी काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली है। इस समय के दौरान रची गई कहानियों में युगबोध, आधुनिक बोध और त्रासदी की पीड़ा साफ झलकती है। अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिमाचली कथा-साहित्य पूरे दायित्व के साथ स्थिति को पहचानता हुआ, राष्ट्रीय मुख्यधारा से जुड़ चुका है और उसकी मौजूदगी को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

हिमाचल की हिन्दी कहानियों में स्त्री अस्मिता और उससे जुड़े हुए विभिन्न पक्ष दिखाई देते है। इन कहानियों में स्त्री दमित या शोषित नहीं बल्कि रूढ़िवादी परम्पराओं से टकराती है और उनका विरोध भी करती है। स्त्री विमर्श एक प्रगतिशील विचार है जो एक ही समय में हमारे देश काल तथा पूरी दुनिया से जुड़ा है। यह विमर्श समकालीन चिंतन का एक प्रमुख विषय है। स्त्री अस्मिता भी स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण आयाम है। पश्चिम में नारी की स्थिति तथा परिवर्तन के प्रभाव स्वरूप ही यहाँ की स्त्री की भूमिका में भी परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समय में परिवार के साथ साथ ग्राम पंचायत से ले कर लोकसभा के सदस्यता को भी स्त्री बड़ी कुशलता के साथ निभा रही है और साथ ही अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति भी सजग है। पश्चिम समाज में स्त्री की पहचान विकसित समाज से जुड़ी हुई है, जबकि भारतीय स्त्री एक विकासशील समाज से जूझ रही है। आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो समाज में परिवर्तन तो हो रहा है किन्तु अपने अधिकार तथा स्वत्रंता का प्रयोग नारी पूरी तरह नहीं कर पाती। परिवार में उसकी दोयम स्थिति बनी हुई है भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसकी नियति तथा स्थिति तथा परिस्थिति से भिन्न है।

वर्तमान समय में स्त्री अस्मिता का जो रूप उभर कर सामने आ रहा है, उसमें नारी स्वतंत्रता के साथ-साथ यौन स्वतंत्रता की मांग उठ रही है। आज नारी की कोमल अनुभूति तीखे आक्रोश में बदल रही है। ऐसे कहानीकारों में कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान तथा नासिरा शर्मा की कहानियाँ हैं। स्त्री विमर्श मुख्य रूप से स्त्री संवेदनात्मक भावना को लेकर भी पर्याप्त मात्रा में सृजन करता है, इनमें मन्नू

भंडारी, इंदु बाली, नासिरा शर्मा तथा अलका सरावगी आदि रचनाकार हैं, इन्होनें अपनी कहानियों में विरोध तथा विद्रोह के तेवर को भी परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के रूप में अपनाया है। वर्तमान समय का स्त्री विमर्श उन पक्षों को भी खोल रहा है जिनके संदर्भ में नारी अब तक मौन पाले हुई थी।

समकालीन कहानीकारों के अनुरूप ही हिमाचली हिन्दी कहानीकारों ने स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया। हिमाचल की प्रारंभिक कहानियों में स्त्री पात्रों की प्रेममयी, ममतामयी, देवी रूप, प्रेम के प्रति उसकी संवेदनशीलता, माँ, बहन, बेटी- बहु के रूप में ही उसका स्वरूप उभर कर सामने आया है। हिमाचली हिन्दी कहानियों में कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के सौन्दर्य का चित्रण किया है और साथ ही वेश्यवृति, दहेज प्रथा, बाल-विवाह आदि समस्याओं को उठाया है। उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग की स्त्रियों का भी शोषण किया गया है।

हिमांचली हिन्दी कहानियों में स्त्रियाँ अपनी अस्मिता के लिए मुखर होती है और पुरुष सत्ता के बरअक्स अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करवाती है। कथाकारों ने कहानियों में स्त्री के अस्तित्त्व बोध, आत्मनिर्णय और अभिव्यक्ति के प्रश्न को केंद्र में रखा। हिमाचल के कुछ कहानीकार ऐसे हैं, जिनकी कहानियों में स्त्री - विमर्श से सम्बद्ध कई-कई मुद्दे एक साथ दिखाई पड़ते हैं। इन कहानियों में स्त्री-विमर्श चेतना शहरी, मध्य वर्ग की स्त्रियों में ज्यादा देखने को मिल रही है। अत: आज स्त्री- पुरुष सम्बन्धों में एकनिष्ट प्रेम व समपर्ण की पारम्परिक पराकाष्ठाएं नहीं मिलेगी। शिक्षित और कामकाजी स्त्री अधिक मुखर हुई है। हिमाचली हिन्दी कहानीकारों ने स्त्री-विमर्श के विभिन्न रूपों का वर्णन अपनी कहानियों में किया है। ये कहानीकार स्त्री-विमर्श के सभी पक्षों को छूते हुए तथा सभी स्त्री पात्र अपनी अस्मिता के साथ उपस्थित होते है तथा निर्णय लेने में भी सक्षम है। इसका सशक्त उदाहरण हमें एस. आर. हरनोट द्वारा लिखित कहानी 'दारोश' स्त्री –विमर्श को लेकर लिखी गई ऐसी कहानी है जिसमें स्त्री संघर्ष ही नहीं करती है बल्कि सामाजिक रुढियों से, परम्पराओं से, प्रथाओं से टकराती भी है और उन्हें सामने लाती है। 'स्त्री –विमर्श' से संबंधित कहानीकारों में श्री निवास श्री कान्त, शान्ता कुमार, केशव, एस. आर. हरनोट, चन्द्ररेखा डढवाल, डॉ. गौतम शर्मा व्यथित, आत्मारंजन, सुदर्शन वशिष्ट, राजकुमार राकेश, बद्रीसिंह भाटिया, रेखा, आशा शैली, आत्मारंजन, हंसराज भारती, योगेश्वर शर्मा, गुरमीत वेदी, मुरारी शर्मा, अरुण भारती एवं ओम भारद्वाज आदि हैं। इन कहानीकारों ने स्त्री मन के भीतर चल रहे अंतर्द्वंद्व और घुटन को अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है और स्त्री के मौन में निहित अवसाद और पीड़ा को मुखर किया है। मुरारी शर्मा ने 'जेठी', 'सेब तोड़ने वाली लड़की' 'मेरे घर का दरवाजा' सभी वर्ग की स्त्रियों का चित्र प्रस्तुत किया है। इन स्त्रियों में ग्रामीण स्त्रियाँ भी हैं। पढ़ी-लिखी आधुनिक स्त्रियाँ भी।

जेठी को शहर जाने के बाद किस प्रकार अत्याचारों का सामना करना पड़ता है, किस प्रकार लोग अपना स्वार्थ निकालने के लिए दमित स्त्रियों का शोषण करते हैं और उन्हें प्रताड़ित करते है। 'मेरे घर का दरवाजा' की पात्र सोमा भी किसी ना किसी रूप में पूरी कहानी में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपने जीवन और समाज से संघर्ष कर रही है। ये कहानियाँ स्त्री – विमर्श की अवधारणा को मुख्य रूप से रेखांकित करती हैं।

हिमाचली हिन्दी कहानियों में ग्रामीण जीवन के सन्दर्भ में स्त्री विमर्श को नये तेवर के साथ प्रस्तुत किया गया है। पर्वतीय स्त्री के जीवन संघर्ष को भी कहानियों में मुख्य रूप से उद्घघाटित किया है साथ ही साथ यह कहानियाँ पहाड़ में खटती स्त्री की चेतना को रेखांकित ही नहीं करती उसकी मुक्ति के आगे का रास्ता भी बनाती है। समकालीन परिदृश्य में में हिमाचल की हिन्दी कहानी नई संभावनाओं को लेकर विकसित होती दिखाई देती है। हिमाचल की हिन्दी कहानियों में एक तरफ मानवीय रिश्ते और उनमें पनपती विकृतियां हैं, तो दूसरी ओर स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, समस्याओं को मुखरित किया गया है। हिमाचली हिन्दी कहानियों में जो विद्रोह दिखता है, वह हमारे समाज में परिवर्तन लाने में सहायक हो सकता है। हिमाचल की हिन्दी कहानी ने राष्ट्रीय धारा की कहानी के साथ पहचान बनाने में भी काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली है। इस समय के दौरान रची गई कहानियों में युगबोध, आधुनिक बोध और त्रासदी की पीड़ा साफ झलकती है। अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिमाचली कथा-साहित्य पूरे दायित्व के साथ स्थिति को पहचानता हुआ, राष्ट्रीय मुख्यधारा से जुड़ चुका है और उसकी मौजूदगी को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार स्पष्ट है की हिमाचली हिंदी कहानियों में 'स्त्री -विमर्श' प्रखर रूप से आया है। ऐसे में आज ये कहानियां स्त्री अस्मिता के सन्दर्भ नई चुनौतियों का सामना कर रहें हैं तथा नए आयाम निर्मित कर रहे है। जब से नारी के कार्य क्षेत्र में बाहरी दुनिया का सम्पर्क बढ़ा, उसने अपने मानवीय रूप को पहचाना, अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई, अपनी विचारों, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया तथा परम्परा से चली आ रही कुप्रथाओं को उखाड़ फेंकने का साहस किया तब से समाज में एक नए तरह की बहस छिड़ी जो की केंद्र में आ गयी और उसमे स्त्री –पुरुष के समानता के रुप में तो कभी स्त्री विमर्श एवं स्त्री-अस्मिता के रूप में अपनी निरंतरता बनाये हुए हैं। हिमाचली हिंदी कहानियों के माध्यम से स्त्री – विमर्श की क्रांतिकारी स्थापनाओं के बरक्स सभी स्त्री पात्र पुरुषों की मानसिक दुचितापन को संवेदनशीलता के साथ समझने की कोशिश करती हैं और खुद बगैर किसी दबाव और विवशता के ठोस निर्णय लेने में कामयाब होती है। 'वक्त तो लगेगा' 'सीवनें उधडती हुई' 'अपनी शर्तों पर' 'धर्म के लिए ही

तो जी रही हूँ' आदि कहानियों में स्त्री –पुरुष संबंधों और सामान्य जीवन के घात – प्रतिघात को अत्यंत बेबाकी से उद्घाटित किया है। आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिमाचली हिंदी कहानी पूरी सिद्दत के साथ महिला जीवन पर पुरुष समाज में उसकी हिस्सेदारी तथा उसकी आर्थिक परतंत्रता पर बात करती है।

संदर्भ :

1. हिमाचल हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ सुशील कुमार फुल्ल, पृष्ट संख्या 53

संदर्भ ग्रन्थ :

1. महादेवी वर्मा, श्रृखंला की कड़ियाँ, प्रथम संस्करण 2001
2. डॉ के.एम. मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, संस्करण 2010
3. कर्मानंद आर्य, अस्मितामूलक साहित्य का सौंदर्यशास्त्र , संस्करण 2018
4. डॉ. सुशील कुमार फुल्ल, हिमाचल की हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, संस्करण 2007
5. डॉ. जोगिन्द्र यादव,समकालीन हिन्दी कहानी को हिमाचल का योगदान
6. डॉ. हेमराज कौशिक , साहित्य के आस्वाद, संस्करण 2017
7. नासिरा शर्मा- आधा आबादी और इलाहाबाद- हिन्दी अनुशीलन, जून-2004
8. डॉ. सुशील कुमार फुल्ल, हिमाचल हिन्दी साहित्य का इतिहास